भारतीय जनसेवा संस्थान विदर्भ प्रदेश, (नागपूर)

द्वारा संचालीत

स्वामी विवेकानंद विद्या मंदिर

छात्रों की दैनंदिनी

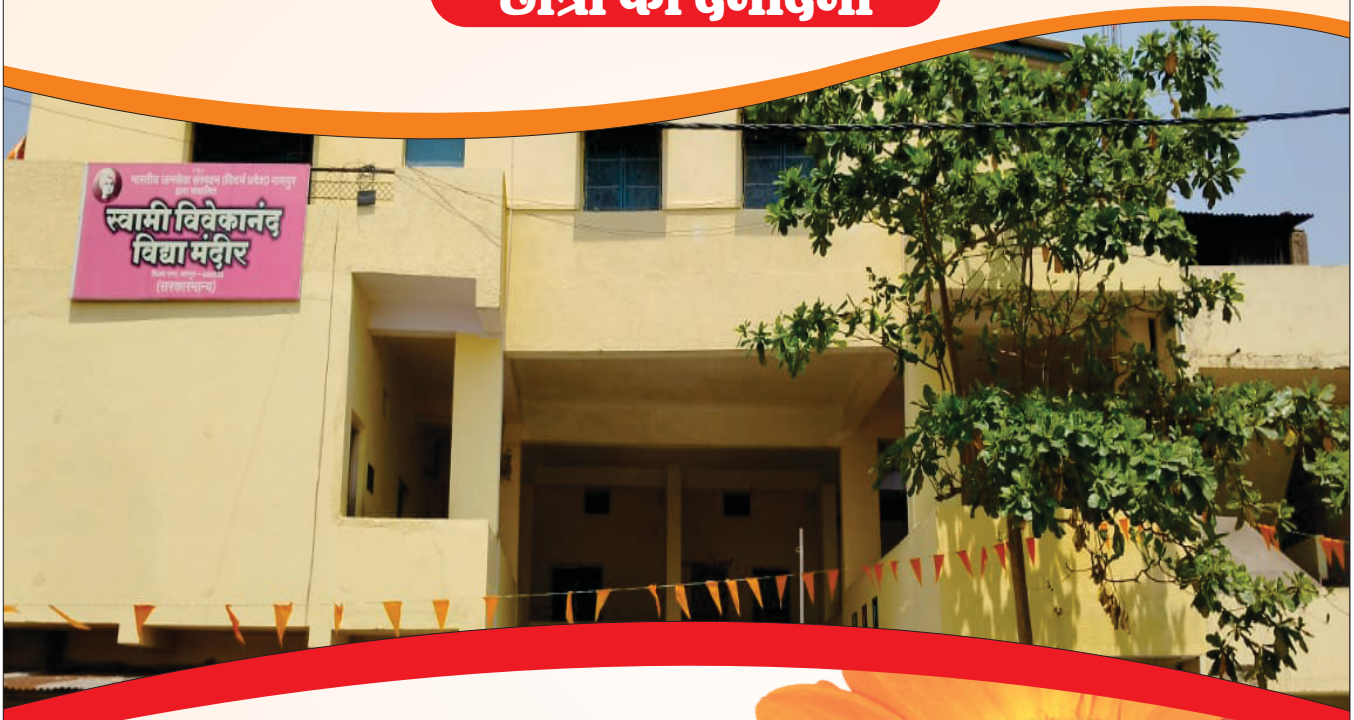

विद्यार्थी का पूरा नाम _____

कक्षा _____ विभाग _____ रोल नं. _____

वर्ग शिक्षक _____

कलमना मार्केट के पास, विजयनगर, नागपूर-४४००३५. मो. नं. ९६०४०९२२५९

E-mail : svvmnagpur@gmail.com

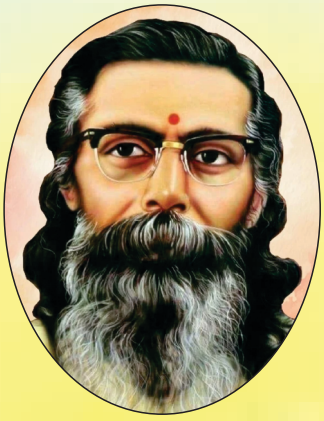

तेरा वैभव अमर रहे

हमारे प्रेरणा स्थान

शिक्षक एवं शिक्षकेतर कर्मचारी

पालकों द्वारा श्रावण महिने मे लघुरूद्र तथा शिवाभिषेक कार्यक्रम

स्वामी विवेकानंद विद्या मंदिर

कलमना मार्केट के पास, विजयनगर, नागपूर-४४००३५. मो. नं. ९६०४०९२२५९
E-mail : svvmnagpur@gmail.com

विद्यार्थी आधार कार्ड संकेतांक

छात्र/छात्रा का पूरा नाम _____

कक्षा _____ तुकडी _____ लिंग _____

जन्म दिनांक _____

पिता का नाम _____ शिक्षण _____

माता का नाम _____ शिक्षण _____

मोबाईल क्र. _____

स्थायी पत्ता _____

_____

_____

_____

छात्र/छात्रा का छंद/रूची _____

जात _____ धर्म _____

पालक की स्वाक्षरी
माता/पिता

वर्ग शिक्षक स्वाक्षरी

भारतीय जनसेवा संस्थान, विदर्भ प्रदेश (नागपूर)
पं.क.ई. १४९९ (ना.)

:: कार्यकारिणी ::

अनु. क्र.	पदाधिकारीयो के नाम	पद
१)	श्री विजयजीतसिंग वालिया	अध्यक्ष
२)	श्रीमती जयमाला काशीकर	उपाध्यक्ष
३)	श्री कृष्णदास गुप्ता	सचिव
४)	श्री मधुर भोतमांगे	सहसचिव
५)	श्री शरदराव दोक	कोषाध्यक्ष
६)	डॉ. श्री हेमंत जांभेकर	विश्वस्त
७)	डॉ. श्री राजेश मुरकुटे	विश्वस्त
८)	श्री संजय गुप्ता	विश्वस्त
९)	श्री राजेश मोटघरे	विश्वस्त
१०)	श्री राजेश पार्डीकर	विश्वस्त
११)	श्री प्रशांत कनोजे	विश्वस्त

स्वामी विवेकानंद विद्या मंदिर

कलमना मार्केट के पास, विजयनगर, नागपूर-४४००३५. मो. नं. ०७१२.२९९३१७४, ९६०४०९२२५९
E-mail : svvmnagpur@gmail.com

शिक्षक एवं शिकेतर कर्मचारी

सौ. विद्या हेमराज बानबले	मुख्याध्यापिका
सौ. सपना सोमेश्वर जनबंधु	उप मुख्याध्यापिका
सौ. मनिषा राजेश कास्वटकर	सहा. शिक्षिका
सौ. वैशाली संजय घारपेंडे	सहा. शिक्षिका
सौ. श्वेता आतिश तिजारे	सहा. शिक्षिका
श्री. किरण रघुनाथ राठोड	सहा. शिक्षक
कु. स्वाती राजकुमार परतेती	सहा. शिक्षिका
सौ. छाया बंडू खडतकर	सहा. शिक्षिका
सौ. ममता सुकुराम केकती	सहा. शिक्षिका
सौ. खिलनश्वरी चैतराम पिछोरे	सहा. शिक्षिका
सौ. गिता नंदु साहु	सहा. शिक्षिका
सौ. पोर्णिमा जगेश्वर पटेल	सहा. शिक्षिका
सौ. शमा अश्विन कोहळे	सहा. शिक्षिका
श्री. गुणवंत धनेष निषाद	सहा. शिक्षक
श्री. अतुल राऊत	सहा. शिक्षक
कु. तानिया वर्मा	सहा. शिक्षिका
सौ. अजीता यादव	सेविका
सौ. शालु कांबळे	सेविका

माता-पिता के लिए निर्देश

१) छात्रों को प्रतिदिन समय पर स्कूल यूनिफॉर्म में उपस्थित होना चाहिए। यदि वे यूनिफॉर्म पहनकर नहीं आएंगे तो उन्हे कक्षा में बैंठने की अनुमति नही दी जाएगी।
२) विद्यार्थि हर दिन अपने साथ आवश्यक नोटबुक, किताबें आदि लेकर आए। साहित्य और दैनिक दिनचर्या को प्रतिदिन अद्यावत किया जाना चाहिए।
३) यदि किसी छात्र को स्कूल में आने मे देर होती है अथवा,अनुपस्थित रहता है, या जल्दी जाना चाहता है , तो दो घंटे पहले सूचना देनी होगी और लिखित आवेदन बच्चे के साथ भेजना होगा, तथा बच्चे को उसके माता-पिता के साथ भेजा जाएगा।
४) शैक्षणिक सत्र की शुरूआत से ही पढ़ाई में नियमितता जरूरी है। अपने बच्चों की पढ़ाई के प्रति सावधान रहें।
५) इस डायरी के माध्यम से विद्यार्थियों के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इसमें छात्रो का दैनिक अध्ययन शामिल है। अभिभावकों को इस संबंध में समय-समय पर कार्यालय से पूछताछ करनी चाहिए।
६) बच्चों का व्यवहार स्कूल अनुशासन की दृष्टि से अनुचित नही होना चाहिए।
७) माता-पिता को अपने बच्चों को स्कूल छोड़ते समय सीधे कक्षा में नहीं जाना चाहिए।
८) सभी पालको को पालक सभाओंमे उपस्थित रहना अनिवार्य है।

छात्रों के लिए निर्देश

विद्यार्थियों को स्कूल में व्यवहार करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।
१) विद्यार्थीयों कों नियमित समय पर विद्यालय में उपस्थित होना अनिवार्य है।
२) कक्षा मे अध्ययन दौरान अनावश्यक रूप से कक्षा से बहार न घुमें।
३) शालेय गणवेश परिपूर्ण होना चाहिए। (ड्रेस, जुते, मोजे, आयकार्ड)
४) पीने के पानी के स्थान या अन्य कार्य स्थलो पर भ़ीड लगाए बिना, अपना काम साफ-सुथरी पंक्तियों में करें।
५) शिक्षक की अनुपस्थिति में कक्षा नेता और उपनेता के नियमों का पालन करे।
६) मिली हुई वस्तू को कार्यालय में जमा करें।
७) बिना किसी बहाने के प्रिंसिपल के कार्यालय में प्रवेश न करें।
८) मध्य अवकाश के दौरान सड़क पर जाने और बाहर का खाना खाने से बचें।
९) सभी के साथ सम्मान और विनम्रता आचरण करें।
१०) अपनी किताबें, नोटबुक आदि सामान को साफ - सुथरे और सावधानीपूर्वक संग्रहित करके स्कूल लाना चाहिए।
११) हम सभी एक स्कूल परिवार का हिस्सा हैं। इसे नहिं भूलना चाहीए।
टिप : विद्यार्थियो ने पालन किये जाने वाले सभी नियम तथा अभिभावकों को दिये गये निर्देश पढ़े लिये हैं।

स्कूल विशेषता ❀

- भव्य सुसज्ज भवन
- विभिन्न खेलों के लिए खेल के मैदान की सुविधा
- ई-लर्निंग डिजिटल कक्षा की सुविधा
- अनुभवी विशेषज्ञ शिक्षक वर्ग
- अतिरिक्त कक्ष की सुविधा
- शासकीय शिष्यवृत्ति योजना
- सुसज्जित ग्रंथालय की सुविधा
- विज्ञान प्रयोगशाला की सुविधा
- हर कक्षा में सीसीटीवी कैमरे की सुविधा
- सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रत्येक विद्यार्थी को सहभागी
- सालाना पिकनिक का आयोजन अंातरशालेय स्पर्धायो में
- भव्य संगणक कक्ष उपलब्ध मोफत पाठ्य पुस्तक योजना १ से १० वी
- मध्यान्ह भोजन सुविधा
- गुणबलापुर्ण व संस्वारक्षर
- s.s.c. परीक्षा का 100% परिणाम
- व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र (मेहंदी, ब्यूटी पार्लर, सिलाई , संगणक के सर्टिफिकेट कोर्सेज

स्कूल के नियमीत कार्यक्रम ❀

पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों पर संस्कारों का दृढीकरण के दर्शन बच्चों तथा समाज में हो सके इस दृष्टि से किया जाता है ।
जैसे : श्री कृष्ण जन्माष्टमी, रक्षाबंधन , कन्यापूजन , स्वास्थ्य परिक्षण
निवासी शिबिर, पालक सम्मेलन , गुड़ीपाड़वा , रामनवमी महापुरुषों की जयंती
इसी प्रकार हमारे महापुरुषों का बच्चों को स्मरण रहे साथ ही साथ महापुरुषों की कहानी प्रेरणादायक गीत, निबंध प्रतियोगिता प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है

गीता श्लोक ❀

१) यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत । अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥
परित्रणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्मासंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥

अर्थ : हे पार्थ! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात साकार रूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ। साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए, पाप कर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की स्थापना करने के लिए मैं युग-युग में प्रकट हुआ करता हूँ।

२) कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥
अर्थः कर्म पर ही तुम्हारा अधिकार है, कर्म के फलों में कभी नहीं... इसलिए कर्म को फल के लिए मत करो। कर्तव्य-कर्म करने में ही तेरा अधिकार है फलों में कभी नहीं। अतः तू कर्मफल का हेतु भी मत बन और तेरी अकर्मण्यता में भी आसक्ति न हो।

३) ज्ञान विज्ञान योग :- येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्म ।।
अर्थ : जिनके पास विद्या, तप, ज्ञान, शील, गुण, धर्म मे से कुछ नही है । वे मनुष्य ऐसा जीवन व्यक्ति करते है । जैसे एक (मृग)
४) नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति॥ ।।
अर्थ
इस संसार में ज्ञान के समान कोई भी पवित्र वस्तु नहीं है।
जो व्यक्ति योग में सिद्ध होता है, वह समय के साथ इसे स्वयं आत्मा में प्राप्त करता है।

नित्य पठनिय श्लोक

कराग्रे वसते लक्ष्मी, करमध्ये सरस्वती ।
करमुले तु गोविन्द, प्रभाते करदर्शनम् ।।

समुद्रवसने देवी पर्वतस्तनमंडले ।
विष्णुपत्नी नमस्तुभ्यं, पादस्पर्श क्षमस्व मे।।

रत्नाकराधौतपदां हिमालयकिरीटिनीम्
ब्रम्हराजर्षिरत्नाढयां वन्दे भारतमातरम्।।

वक्रतुंड महाकाय सुर्यकोटि समप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।

गुरूः ब्रम्हा गुरूर विष्णु गुरूर देवो महेश्वरः।
गुरूर साक्षात् परब्रम्ह, तस्मै श्री गुरवे नमः।

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्यें त्र्यंबके गौरी नारायणी नमोस्तुते।।

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्तै नमस्तस्तै नमस्तस्तै नमों नमः।।

ओम् असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतीर्गमय।
मृत्यो मा अमृतं गमय।।

ओम् सर्वे पि सुखिनः सन्तु, सर्वे संन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्रणि पश्चन्तु, मा कश्चित दुःख माप्नुयात।।

ओम् संगच्छध्वं संवदंद्वँसं वो मनांसि जानताम्
देवाभागं, यथापूर्वे संजानाना उपासते।।

ओम् भूर्भवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

ओम् पूर्णमद पूर्णमिदं पूर्णात पूर्णमुदच्यते।
पुर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यत्ते।।
ओम शांती शांती शांतीः

राष्ट्रगीत

जनगणमन-अधिनायक जय हे
भारत-भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधू, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधि तरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशीष
माँगे, गाहे तव जयगाथा।
जनगण मंगलदायक जय हे।
भारत - भाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे॥

राज्यगीत

जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा
रेवा वरदा, कृष्ण कोयना, भद्रा गोदावरी
एकपणाचे भरती पाणी मातीच्या घागरी
भीमथडीच्या तट्टांना या यमुनेचे पाणी पाजा
जय जय महाराष्ट्र माझा...
भीती न आम्हा तुझी मुळी ही गडगडणाऱ्या नभा
अस्मानाच्या सुलतानीला जवाब देती जीभा
सह्याद्रीचा सिंह गर्जतो, शिवशंभू राजा
दरीदरीतून नाद गुंजला महाराष्ट्र माझा
काळ्या छातीवरी कोरली अभिमानाची लेणी
पोलादी मनगटे खेळती खेळ जीवघेणी
दारिद्र्याच्या उन्हात शिजला,
निढळाच्या घामाने भिजला
देशभौरवासाठी झिजला
दिल्लीचेही तख्त राखितो, महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा

हम को मन की शक्ति देना

हम को मन की शक्ति देना, मन विजय करे दुसरों की जय से पहले, खुद को जय करे

भेदभाव अपने दिल से साफ कर सके दोस्तो से भूल हो तो माफ कर सके झूठ से बचे रहे, सच का दम भरे दुसरों की जय से पहले, खुद को जय करे
मुश्किले पड़े तो हम पे इतना कर्म कर साथ दे तो धर्म का, चले तो धर्म पर खुद पे हौसला रहे, बदी से ना डरे दुसरों की जय से पहले, खुद को जय करे

हम को मन की शक्ति देना, मन विजय करे दुसरों की जय से पहले, खुद को जय करे

सारे जहां से अच्छा

सारे जहां से अच्छा

हिन्दोस्तां हमारा हमारा

सारे जहां से अच्छा

हम बुलबुलें हैं इसकी

ये गुलिसतां हमारा हमारा (२ वेळा)

सारे जहां से अच्छा

हिन्दोस्तां हमारा हमारा

सारे जहां से अच्छा

पर्वत वो सबसे ऊँचा

हमसाया आसमां का

वो संतरी हमारा

वो पासबाँ हमारा हमारा

सारे जहां से अच्छा

हिन्दोस्तां हमारा हमारा सारे जहां से अच्छा

गोदी में खेलती है जिसकी हजारों नदियां

गुलशन है जिसके दम से

रश्क-ए- जीना हमारा हमारा

सारे जहां से अच्छा

हिन्दोस्तां हमारा हमारा

सारे जहां से अच्छा

मजहब नहीं सिखाता

आपस में बैर रखना

हिंन्दी है हम वतन है

हिंन्दी है हम वतन है

हिंन्दी हैं हम वतन है

हिन्दोस्तां हमारा हमारा

सारे जहां से अच्छा

हिन्दोस्तां हमारा हमारा

सारे जहां से अच्छा

प्रतिज्ञा

भारत माझा देश आहे. सारे भारतीय माझे बांधव आहेत.

माझ्या देशावर माझे प्रेम आहे.माझ्या देशातल्या समृद्ध आणि विविधतेने नटलेल्या परंपरांचा मला अभिमान आहे. त्या परंपरांचा पाईक होण्याची पात्रता माझ्या अंगी यावी म्हणून मी सदैव प्रयत्न करीन.

मी माझ्या पालकांचा गुरूजनांचा आणि वडीलधाऱ्या माणसांचा मान ठेवीन आणि प्रत्येकाशी सौजन्याने वागेन.

माझा देश आणि माझे देशबांधव यांच्याशी निष्ठा राखण्याची मी प्रतिज्ञा करीत आहे. त्यांचे कल्याण आणि त्यांची समृद्धी ह्यातच माझे सौख्य सामावले आहे.

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है। सभी भारतीय मेरे भाई बहन है । मुझे अपने देश से प्यार है। अपने देश की समृद्ध विविधताओं से विभूषित परम्पराओं पर मुझे गर्व है।

मैं हमेंशा प्रयत्न करुँगा कि उन परम्पराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो।

मैं अपने माता - पिता, गुरुजनों और बडों का सम्मान करुँगा और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करुँगा।

मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं अपने देश और देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा। उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित हैं।

PLEDGE

"India is my country. All Indians are my brother and sisters.

I love my country, and I am proud of its rich and varied heritage. I shall always strive to be worthy of it

I shall give respect to my parents, teachers and all elders and treat everyone with courtesy.

To my country and my people, I pledge my devotion. In their well-being and prosperity alone lies my happiness".

The Constitution of India
Preamble

WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC and to secure to all its citizens :

JUSTIC, social, economic and political;

LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship;

EQUALITY status and of opportunity; and to promote among them all;

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the unity and integrity of the Nation;

IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLE this twenty- sixth day of November, 1949, do HEREBY ADOPT, ENACT AND GIVE TO OURSELVES THIS CONSTITUTION.

भारताचे संविधान

उद्देशिका

आम्ही, भारताचे लोक, भारताचे एक सार्वभौम

समाजवादी धर्मनिरपेक्ष लोकशाही गणराज्य घडविण्याचा

व त्याच्या सर्व नागरिकांस :

सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक **न्याय;**

विचार, अभिव्यक्ती, विश्वास, श्रद्धा

व उपासना यांचे **स्वातंत्र्य;**

दर्जाची व संधीची **समानता;**

निश्चितपणे प्राप्त करून देण्याचा

आणि त्या सर्वांमध्ये व्यक्तीची प्रतिष्ठा

व राष्ट्राची एकता आणि एकात्मता

यांचे आश्वासन देणारी **बंधुता**

प्रवर्धित करण्याचा संकल्पपूर्वक निर्धार करून;

आमच्या संविधानसभेत

आज दिनांक सव्वीस नोव्हेंबर, १९४९ रोजी

याद्वारे हे संविधान अंगीकृत आणि अधिनियमित करून स्वत:प्रत अर्पण करीत आहोत.

भारत का संविधान

हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी धर्म-निरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक, और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास धर्म और उपासना की स्वतंत्रता

प्रतिष्ठा और अवसर की क्षमता प्राप्त करानें के लिए, तथा उन सब में-

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता

और एकात्मता सुनिश्चित करने वाली

बंधुता बढाने के लिए,

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान-सभा में आज तारीख 26 नवंबर 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत दो हजार छह विक्रमी) को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

पसायदान

आतां विश्वात्मकें देवें । येणें वाग्यज्ञें तोषावें ।
तोषोनि मज द्यावे । पसायदान हें ।।१।।
जे खळांचि व्यंकटी सांडो। तया सत्कर्मी रति वाढो।
भूतां परस्परे जडो। मैत्र जिवांचे ।।२।।
दुरितांचे तिमिर जावो। विश्वस्वधर्म सूर्ये पाहो।
जो जे वांछील तो ते लाहो। प्राणिजात ।।३।।
वर्षत सकळमंगळी । ईश्वरनिष्ठांची मांदियाळी ।।
अनवरत भूमंडळी । भेटतु भूतां ।।४।।
चला कल्पतरूंचे आरव । चेतना चिंतामणीचे गांव ।
बोलती जे अर्णव । पीयुषांचे ।। ५।।
चन्द्रमे जे अलांछन । मार्तंड जे तापहीन।
ते सर्वाहि सदा सज्जन। सोयरे होतु।।६।।
किंबहुना सर्वसुखी। पूर्ण होऊनि तिहीं लोकी ।
भजिजो अदिपुरखी। अखंडित ।।७।।
आणि ग्रंथोपजीविये। विशेषी लोकी इये।
दृष्टादृष्टविजये हो आवें जी ।।८।।
येथ म्हणे श्री विश्वेश्वरावो । हा होईल दानपसावो।
येणे वरे ज्ञानदेवो ।सुखिया जाला ।।९।।

श्री सरस्वती

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रम्हाऽच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवै : सदा वंदिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाडयापहा ।।

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीम्
वीणापुस्तकधारिणीम् अभयदां जाड्यान्धकारापहाम्
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्
वन्दे तां परमेश्वरी भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ।।2।।

वंदे मातरम्

वन्दे मातरम् ।
सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम् ।
सस्यश्यामलाम् मातरम् ।।धृ।।
शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम् ।
फुल्लकुसुमित दृमदल शोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम् मातरम्।।१।।
कोटीकोटिकंठ कलकल निनाद कराले
कोटीकाटी भूजैर्धृतखरकरवाले
अबलाके नोमांए तो बले
बहुबल धारिणीम् नमामि तारिणीम्
रिपुदल वारिणीम् मातरम्।।२।।
वन्दे मातरम् ।
तुमि विद्या तुमि धर्म
तुमि हृदि तुमि मर्म
त्वं हि प्राणा शरीरे
बाहुते तुमि मा शक्ति
हृदये तुमि मा भक्ति
तोमारई प्रतिमा गडी मंदिरे
मातरम्.... ।।३।।।
त्वं हि दुर्गा दशःग्रहरम धारिणीम्
कमला कमल दल विहारिणीम्
वाणी विद्या दायाम्
नमामित्वां,नमामि कमलाम्,
अमलाम् अतुलाम् ,
सुजलां सुफलां मातरम्
श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्
धरणिं भरणिं मातरम् ,
वन्दे मातरम् ।

चंदन है इस देश की माटी

चंदन है इस देश की माटी तपोभूमि हर ग्राम है
हर बाला देवी की प्रतिमा बच्चा बच्चा राम है ||

हर शरीर मंदिर सा पावन हर मानव उपकारी है
जहाँ सिंह बन गये खिलौने, गाय जहाँ माँ प्यारी है
जहाँ सवेरा शंख बजाता लोरी गाती शाम है || 1 ||

जहाँ कर्म से भाग्य बदलता श्रम निष्ठा कल्याणी है
त्याग और तप की गाथाएँ गाती कवि की वाणी है
ज्ञान जहाँ का गंगाजल सा निर्मल है अविराम है || 2 ||

जिस के सैनिक समरभूमि मे गाया करते गीता है
जहाँ खेत मे हल के नीचे खेला करती सीता है
जीवन का आदर्श जहाँ पर परमेश्वर का धाम है || 3 ||

चरैवेति चरैवेति...

चरैवेति चरैवेति यही तो मन्त्र है अपना
नहीं रुकना नहीं थकना सतत् चलना सतत् चलना
यही तो मन्त्र है अपना शुभंकर मन्त्र है अपना

हमारी प्रेरणा भास्कर है जिनका रथ सतत् चलता
युगों से कार्यरत है जो सनातन है प्रबल उर्जा
गति मेरा धरम है जो भ्रमण करना भ्रमण करना
यही तो मन्त्र है अपना शुभंकर मन्त्र है अपना...

हमारी प्रेरणा माधव हैं जिनके मार्ग पर चलना
सभी हिन्दू सहोदर है ये जन जन को सभी कहना
स्मरण उनका करेंगे और समय दे अधिक जीवन का
यही तो मन्त्र है अपना शुभंकर मन्त्र है अपना...

हमारी प्रेरणा भारत है भूमि की करें पूजा
सुजला सुफ़ला सदा स्नेहा यही तो रूप है उसका
जियें माता के कारण हम करें जीवन सफ़ल अपना
यही तो मन्त्र है अपना शुभंकर मन्त्र है अपना...

यही तो मन्त्र है अपना...
यही तो मन्त्र है अपना...
यही तो मन्त्र है अपना...

देश हमें देता है सब कुछ

देश हमें देता है सब कुछ,
हम भी तो कुछ देना सीखें।।
सूरज हमें रोशनी देता,
हवा नया जीवन देती है,
भूख मिटाने को हम सबकी,
धरती पर होती खेती है,
औरों का भी हित हो जिसमें,
हम ऐसा कुछ करना सीखें।। 1।।
पथिकों को तपती दुपहर में,
पेड़ सदा देते हैं छाया,
सुमन सुगंध सदा देते हैं,
हम सबको फूलों की माला,
त्यागी तरुओं के जीवन से
हम परहित कुछ करना सीखे ॥2॥
जो अनपढ़ हैं उन्हें पढ़ायें,
जो चुप हैं उनको वाणी दें,
पिछड़ गये जो उन्हें बढ़ायें,
प्यासी धरती को पानी दें,
हम मेहनत के दीप जलाकर,
नया उजाला करना सीखें।। 3।।

हीच अमुची प्रार्थना

हीच अमुची प्रार्थना अन् हेच अमुचे मागणे
हीच अमुची प्रार्थना अन् हेच अमुचे मागणे
माणसाने माणसाशी माणसासम वागणे
हीच अमुची प्रार्थना अन् हेच अमुचे मागणे
माणसाने माणसाशी माणसासम वागणे
हीच अमुची प्रार्थना
धर्म जाती प्रांत भाषा द्वेष सारे संपू दे
धर्म जाती प्रांत भाषा द्वेष सारे संपू दे
एक निष्ठा एक आशा एक रंगी रंगू दे
अन् पुन्हा पसरो मनावर शुद्धतेचे चांदणे
माणसाने माणसाशी माणसासम वागणे
हीच अमुची प्रार्थना
भोवताली दाटला अंधार दुःखाचा जरी
सूर्य सत्याचा उद्या उगवेल आहे खात्री
भोवताली दाटला अंधार दुःखाचा जरी
सूर्य सत्याचा उद्या उगवेल आहे खात्री
तोवरी देई आम्हाला काजव्यांचे जागणे
माणसाने माणसाशी माणसासम वागणे
हीच अमुची प्रार्थना
लाभले आयुष्य जितके ते जगावे चांगले
पाउले चालो पुढे जे थांबले ते संपले
घेतला जो श्वास आता तो पुन्हा ना लाभणे
माणसाने माणसाशी माणसासम वागणे
हीच अमुची प्रार्थना अन् हेच अमुचे मागणे
माणसाने माणसाशी माणसासम वागणे
हीच अमुची प्रार्थना

हे शारदे माँ

हे शारदे माँ हे शारदे माँ
अज्ञानता से हमे तार दे माँ
तू स्वर की देवी से संगीत तुझसे
हर शब्द तेरा, हर गीत तुझसे
हम है अकेले, हम है अधुरे
तेरी शरण में हमे प्यार दे माँ
हे शारदे माँ..... ।।1।।

मुनियो ने समझी,
गुणियो ने जानी
वेदों की भाषा, पुराणो की वाणी
हम भी तो समझे, हम भी तो जाने
विद्या का हमको अधिकार दे माँ
हे शारदे माँ, हे शारदे माँ

तू श्वेत वर्णी कमल पे विराजे
हाथों में वीणा, मुकुट सर पे साजे,
मन से हमारे मिटा के अंधेरे
हमको उजाले का संसार दे माँ
हे शारदे माँ, हे शारदे माँ ।।3।।

सुबह सवेरे लेकर तेरा नाम प्रभु

सुबह सवेरे लेकर तेरा नाम प्रभु
करते हैं हम शुरु
आज काम प्रभु ।। धृ।।

शुद्ध भाव से तेरा
ध्यान लगाए हम
विद्या का वरदान तुम्ही
से पाए हम

हां विद्या का वरदान
तुम्ही से पाए हम
तुम्हीं से है आगाज
तुम ही से अंजाम प्रभु

करते हैं हम शुरु आज का
काम प्रभु
सुबह सवेरे लेकर
तेरा नाम प्रभु करते हैं
हम शुरु आज का काम प्रभु

गुरुओं का सत्कार कभी
ना भूले हम इतना बने
महान गगन को छूले हम
हॉ इतना बने महान
गगन को छू ले हम तुम्ही से हर सुबह तुम्ही से शाम प्रभु
करते हैं हम शुरु आज का काम प्रभु
सुबह सवेरे

सुविचार

१)'सपनों की उड़ान वही भर सकते है, जो अपने डर को पिछे छोड देते हैं।'
२) 'हर नया दिन एक नया अवसर है, अपने लक्ष्य के करिब जाने का।'
३) 'अपनी मेहनत पर भरोसा रखो, किस्मत खुदही बदल जाएगी

समय सारणी

वार	1	2		3	4		5	6	7	8
सोमवार			लघु विश्रांती			दिर्घ विश्रांती				
मंगळवार										
बुधवार										
गुरूवार										
शुक्रवार										
शनिवार										

स्कुल का समय सोमवार से शुक्रवार 11:20 से 5:00
शनिवार सुबह 7:30 से 11:10

विद्यार्थीयोंसंबंधी पालको के लिए निर्देश

दिनांक	विद्यार्थीयोंसंबंधी पालको के लिए निर्देश	स्वाक्षरी

अनुपस्थिती की नोंद

वर्ग शिक्षक _____ कक्षा _____ विभाग _____

मेरा पाल्य _____

आगे दिए गए दिन और बताए गए कारण के लिए अनुपस्थित रहेगा.

इसलिए आप उसकी छुट्टी मंजूर करे यह विनती.

पालक की स्वाक्षरी

अ.क्र.	दिनांक	कारण	पालक की स्वाक्षरी	वर्ग शिक्षक की स्वाक्षरी

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Date	Subject	

Special Programm

Activity

रक्षाबंधन कार्यक्रम

मातृपुजन कार्यक्रम (१४ फरवरी)

भारतीय जनसेवा संस्थान
विदर्भ प्रदेश, नागपूर द्वारा संचालन
स्वामी विवेकानंद विद्या मंदिर
विजय नगर, नागपूर
SSC बोर्ड परिक्षा मार्च 2025 का निकाल
गुणवंत विद्यार्थी
88.20%
मनिष रमेश सुर्यवंशी
87.60%
आशिष आलोक यादव
84%
पुजा दिनेश गंगबोईर
81%
देवेंद्र संतोषकुमार शाहु
79%
खुशी अर्जुन शाहु

स्वामी विवेकानंद
विद्या मंदिर